भवानी प्रसाद मिश्र की साहित्यिक विशेषताएँ

Bhavani Prasad Mishra Ki Sahityik Visheshatayen

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangalore.**

भूमिका:-

भवानी प्रसाद मिश्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि माने जाते हैं। वे एक प्रसिद्ध कवि एवं गांधी विचारक थे। गांधी दर्शन का प्रभाव उनकी कविताओं में साफ देखा जा सकता है। वे 'दूसरा सप्तक' के प्रथम कवि रहे है। उनके गीतों ने आधुनिक हिन्दी साहित्य को नई दिशा प्रदान की। उनका प्रथम काव्य 'गीत-फ़रोश' अपनी नई शैली, नई उद्भावनाओं और नवीन पाठ-प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ। लोग उन्हें प्यार से 'भवानी भाई' कहकर सम्बोधित किया करते थे। भवानीप्रसाद मिश्र की कविताएं भाव और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से बहुत अधिक प्रभावशाली हैं। इन कविताओं में उन्होंने अपनी अनुभूतियों को बहुत सरल शब्दों में व्यक्त किया है। उनकी कविताओं का भावपक्ष सामाजिक भाव बोध, संवेदनशीलता, आत्मीयता, सहजता आदि जिन विशिष्टताओं से युक्त है, वे इस प्रकार हैं -

सामाजिक भाव

बोध-मिश्र जी की कविता व्यक्तिवादी कविता नहीं है, वह सामाजिक भाव-बोध से संपन्न है। मिश्र जी ने अपने काव्य में सामान्य जन-जीवन के विषम संघर्ष की उपेक्षा नहीं की वरन् सामाजिक अन्याय, शोषण, अभाव आदि का वर्णन किया है और इनके विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा दी। वे अपनी कविताओं के सारे विषय जीवन और समाज से ही उठाते हैं। लेकिन उन्होंने अपनी कविताओं को जीवन से जोड़कर भी सरस और सुन्दर बनाए रखा है।

संवेदनशीलता

भवानीप्रसाद मिश्र की कविताओं की एक अन्य विशेषता है-संवेदनशीलता। उनकी प्रसिद्ध कविताएं जैसे- 'सतपुड़ा के जंगल', 'घर की याद', 'आशा-गीत' आदि उनकी गहरी संवेदनशीलता के परिचायक हैं। उनके काव्य में अनुभूति और संवेदना की प्रधानता है। चिंतन, दर्शन आदि की बोझिलता उसमें नहीं है। अगर चिंतन के तत्त्व आए भी हैं तो वे उनकी संवेदनशीलता में ढलकर ही प्रकट हुए हैं।

आत्मीयता

मिश्र जी की कविताओं में आत्मीयता का गुण भी मिलता है। वे अक्सर अपने पाठक को सम्बोधित करते हैं या फिर प्रश्न पूछते हैं। सम्बोधित करते समय वे अक्सर पाठक को आत्मीयता के साथ समझाते हैं या प्रश्न के द्वारा उसे फटकारते हैं। उनके काव्य की यह आत्मीयता पाठक को उनके साथ जोड़े रखती है।

आस्तिकता और आस्था

मिश्र जी आस्तिक और आस्थावादी कवि हैं। हालांकि वे ईश्वर पर विश्वास नहीं करते। लेकिन मानव-मूल्यों के प्रति उनकी आस्तिकता और आस्था उनकी कविताओं में व्यक्त हुई है।

यथार्थ-बोध

भवानीप्रसाद मिश्र ने जीवन के सहज और यथार्थ रूप की अभिव्यक्ति अपनी कविताओं में की है। लेकिन उनका यथार्थ-बोध केवल जीवन की कटुता, निराशा और विषमता का चित्रण नहीं करता। वरन् उनके यथार्थ-बोध के पीछे मानवता की विजय और सुखपूर्ण भविष्य की आशा छिपी हुई है और इसका कारण है-उनकी गाँधीवाद में आस्था। गाँधीवादी आस्था के कारण ही उनके यथार्थ बोध में निराशा का स्वर नहीं मिलता।

प्रकृति-चित्रण

मिश्र जी के काव्य में प्रकृति के सहज, मोहक और यथार्थ रूप का चित्रण मिलता है। उनके प्रकृति चित्रण छायावादी सौंदर्य चित्रणों से भिन्न हैं। उनकी कविताओं में सतपुड़ा, विन्ध्य, रेवा और नर्मदा आदि के अनेक चित्र मिलते हैं। 'सतपुड़ा के जंगल' नामक उनकी कविता में प्रकृति के प्रति उनकी संवेदनशील अनुभूतियां इस प्रकार व्यक्त हुई हैं -

"सतपुड़ा के घने जंगल

नींद में डूबे हुए से,

उंघते अनमने जंगल।"

यहां जंगल निर्जीव न रहकर सजीव, सप्राण जीवन का प्रतिरूप बन गया है। जंगल के विभिन्न अवयव जीवन और जगत की विभिन्न स्थितियों को प्रतिबिंबित करते हैं।

सहजता

हजता मिश्र जी के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है। उनकी कविताओं में साधारण जीवन के सहज-साधारण अनुभव व्यक्त हुए हैं। उन्होंने जीवन के सहज रूप को अपनी दृष्टि से देखा और अपने ढंग से उसकी सहज, अकृत्रिम अभिव्यक्ति को। लेकिन उनकी कविता सहज होते हुए भी पूर्णतः अर्थपूर्ण है जिसके कारण उनकी काव्य-पंक्तियाँ सूक्ति या सूत्रवाक्य का रूप धारण कर लेती हैं। इस प्रकार की सारी काव्य-पंक्तियाँ जीवन की गम्भीर स्थितियों को व्यक्त करती हैं।

भाषा शैली

भवानीप्रसाद मिश्र की **भाषा शैली** अत्यन्त सहज और बोलचाल की भाषा के निकट है। 'दूसरा सप्तक' के वक्तव्य में उन्होंने अपनी भाषा शैली के विषय में लिखा है कि, "वर्ड्सवर्थ की एक बात मुझे बहुत पटी कि 'कविता की भाषा यथासंभव बोलचाल के करीब हो।'..... तो मैंने जाने-अनजाने कविता की भाषा सहज रखी.....। बहुत मामूली रोजमर्रा के सुख-दुख मैंने इनमें कहे हैं जिनका एक शब्द भी किसी को समझाना नहीं पड़ता।"

मिश्र जी की इस सहज सरल भाषा की सपाटबयानी में भी अद्‌भुत सौंदर्य है। इसका कारण यह है कि उनके अनुभवों में मौलिकता और ईमानदारी है अतः उनकी सीधी सपाट भाषा में भी आकर्षण और ताजगी आ गई है। हिन्दी

काव्य-भाषा को मिश्र जी की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने बोलचाल की भाषा को साहित्यिक भाषा और काव्यभाषा का दर्जा प्रदान किया। उनकी कविताओं को पढ़ते समय ऐसा लगता है जैसे कोई मित्र हमसे बातचीत कर रहा हो अर्थात् कवि और पाठक के बीच कोई औपचारिकता या दूरी नहीं लगती है। भवानी प्रसाद मिश्र की भाषा खड़ी बोली है। उनकी भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक और जनसाधारण योग्य है। छन्दमुक्त कविता उन्हें अभीष्ट है।

मिश्र जी की भाषा की सादगी और ताजगी पाठकों को अपनी ओर खींच लेती है। इनकी भाषा संवेदनशील और भावपूर्ण है। संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ स्थानीय और विदेशी शब्दों का प्रयोग मिश्र जी की भाषा को सहज और स्वाभाविक बना देता है। मानवीय भावों के सम्प्रेषण में इनकी भाषा पूर्ण सक्षम है। इनकी भाषा में कृत्रिमता का सर्वथा अभाव है। 'घर की याद' मिश्र जी की संस्मरणात्मक कविता है। 'पिता' शीर्षक कविता उसी का अंश है। इस कविता में मिश्र जी ने पिता जी के स्मरण चित्र चित्रित किए हैं- "पिताजी भोले, बहादुर, व्रज- भुज नवनीत सा उर।" अनेक तत्सम शब्दों के साथ स्थानीय शब्दों का प्रयोग भी किया है। तिर रहा है, हिचके, बिचके, बोल, पहाड़, बड़, खम स्थानीय शब्दों के साथ फ्रिक, मजे, शक, खुद, बक आदि विदेशी भाषा के शब्द है। इस कविता में अनेक मुहावरे हिचकना-बिचकना, नैनों में जल छाना, जी चीर देना का सटीक प्रयोग हुआ है। अनेक स्थान पर अनुप्रास, रूपक, उपमा, मानवीकरण अलंकारो का प्रयोग हुआ है। कविता की भाषा अत्यधिक सरल और संवेदनशील है और कवि के मानवीय भावों को स्पष्ट करने में सक्षम है। अनेक स्थानों पर चित्रात्मकता प्रधान रही है। पिता का हृदय बड़ के वृक्ष की भाँति संवेदनशील बताया गया है। कवि के अतुलनीय पितृ प्रेम को उनकी भाषा पूर्णरूप से वर्णन करने में सफल है।

उनकी काव्यभाषा में यह विशेषता उनके शब्द-चयन से आई है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है। उनके अधिकांश तत्सम शब्द भी वे हैं जो प्रचलित हैं और हिन्दी में अपना लिए गए हैं। लेकिन वे प्रचलित शब्दों का भी ऐसी ठीक जगह प्रयोग करते हैं कि शब्द अपने अर्थ को बहुत ही तीखेपन से उजागर करता है।

तत्सम और तद्भव शब्दों के साथ ही उन्होंने ग्राम्य तथा प्रांतीय शब्दों का प्रयोग भी किया है। इस तरह के शब्दों ने उनकी भाषा को एक नयी शक्ति और ताजगी दी है। साथ ही इनसे कविताओं में लोकभाषा की लय और सीधापन आ गया है।

मिश्र जी ने अधिकतर छोटी-छोटी कविताएं लिखी हैं। छोटे से छंद की दो-दो पंक्तियों के बाद वे तुक बदल देते हैं। इससे भाषा में लय और गति आ गई है। इन्हीं छोटे छंदों में वे छोटी से छोटी वस्तु और बड़ी से बड़ी बात का भी बहुत सुन्दर और लयात्मक वर्णन करते हैं।

मिश्र जी की काव्य भाषा में विंबात्मक और प्रतीकात्मक क्षमता भी है। उनके बिंब और प्रतीक भी बहुत स्पष्ट और सहज हैं। उनमें कहीं भी जटिलता या बोझिलता नहीं मिलती। लाक्षणिक-आलंकारिक तत्सम काव्य शैली को उन्होंने प्रायः कहीं नहीं अपनाया है। वस्तुतः वे ठीक उसी प्रकार लिखते हैं जिस प्रकार हम रोजमर्रा के जीवन में बोलते हैं। अभिव्यक्ति की सहजता, आत्मीयता और कलात्मकता उनकी काव्यशैली की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनुभूति और अभिव्यक्ति की इन अप्रतिम विशेषताओं ने मिश्र जी को आधुनिक हिन्दी कवियों में एक विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया है।

निष्कर्ष :

भवानी प्रसाद मिश्र उन गिने चुने कवियों में थे, जो कविता को ही अपना धर्म मानते थे और आमजनों की बात उनकी भाषा में ही रखते थे। वे 'कवियों के कवि' थे। मिश्र जी की कविताओं का प्रमुख गुण कथन की सादगी है। बहुत हल्के-फुलके ढंग से वे बहुत गहरी बात कह देते हैं जिससे उनकी निश्छल अनुभव संपन्नता का आभास मिलता है। इनकी काव्य-शैली हमेशा पाठक और श्रोता को एक बातचीत की तरह सम्मिलित करती चलती है। मिश्र जी ने अपने साहित्यिक जीवन को बहुत प्रचारित और प्रसारित नहीं किया। मिश्र जी मौन निश्छलता के साथ साहित्य-रचना में संलग्न हैं। इसीलिए उनके बहुत कम काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'गीत-फ़रोश' के प्रकाशन के वर्षों बाद 'चकित है दुख', और 'अंधेरी कविताएँ' नामक दो काव्य-संग्रह इधर प्रकाशित हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

- सामान्य से दिखने वाले असाधारण कवि, महावीर सरन जैन, रचनाकार, २०१३
- सतपुड़ा के जंगल, **मन एक मैली क़मीज़ है (पृष्ठ १७)**, **संपादक** : **नंदकिशोर आचार्य**, **भवानी प्रसाद मिश्र**, **वाग्देवी प्रकाशन**, **संस्करण** : **१९९८**
- गीत-फ़रोश, मन एक मैली क़मीज़ है (पृष्ठ १३), **संपादक** : **नंदकिशोर आचार्य**, **भवानी प्रसाद मिश्र**, **वाग्देवी प्रकाशन**, **संस्करण** : **१९९८**
- बुनी हुई रस्सी, मन एक मैली क़मीज़ है (पृष्ठ १२), **संपादक** : **नंदकिशोर आचार्य**, **भवानी प्रसाद मिश्र**, **वाग्देवी प्रकाशन**, **संस्करण** : **१९९८**